1. सामाजिक समूहों में जेण्डर
Gender in Social Groups

सामाजिक समूहों से आशय विविध प्रकार की सामाजिक संस्थाओं एवं तथ्यों से है जिनके माध्यम से समूह का निर्धारण सम्भव होता है। विविध प्रकार के सामाजिक समूहों में जेण्डर का अभिप्राय निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है—

1. परिवार में जेण्डर की परिभाषा (Definition of gender in family)—परिवारिक दृष्टि से जेण्डर का अभिप्राय परिवार में स्त्री-पुरुषों के मध्य कार्य, शक्ति एवं कर्त्तव्यों के विभाजन से होता है। एक परिवार में माता का कर्त्तव्य रसोईघर में भोजन निर्माण की व्यवस्था है तो पिता का कर्त्तव्य धन कमाने की व्यवस्था करना होता है, भाई का कर्त्तव्य अपनी बहनों को प्यार करना होता है तथा बहन का कर्त्तव्य अपने बड़े भाई की आज्ञा का पालन करना होता है। इस प्रकार परिवार के आधार पर जेण्डर स्त्री वर्ग एवं पुरुष वर्ग के दायित्वों एवं अधिकारों का विभाजन करता है। **प्रो. एस. के. दुबे** के शब्दों में, "परिवार में जेण्डर का आशय कर्त्तव्य, अधिकार एवं शक्ति का तर्कपूर्ण विभाजन होता है जिसमें पुरुष एवं महिला वर्ग दोनों को ही सन्तुष्ट करने का प्रयास किया जाता है।"

2. समाज में जेण्डर की परिभाषा (Definition of gender in society)—**पेपनेक** के अनुसार, "समाज में जेण्डर स्त्री-पुरुष से सम्बन्धित है जो स्त्री-पुरुष की भूमिकाओं को सांस्कृतिक आधार पर परिभाषित करने का प्रयास करता है एवं स्त्री-पुरुष के विशेषाधिकारों से सम्बन्धित है।" जेण्डर का सामाजिक व्यवस्था में मात्र यही कार्य है कि वह विविध प्रकार की सामाजिक परम्पराओं की व्याख्या स्त्री-पुरुष के सन्दर्भ में करता है; जैसे—स्त्री को सदैव पति की आज्ञा का पालन करना चाहिये तथा उसके सुख का ध्यान रखना चाहिये, पुरुष को धन कमाकर अपनी स्त्री का भरण-पोषण करना चाहिये। प्रत्येक स्त्री-पुरुष को अपने कर्त्तव्यों

Scanned with CamScanner

का पालन करना चाहिये। इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था के समस्त कर्त्तव्य, अधिकार एवं व्यवहार को स्त्री-पुरुष के मध्य वर्गीकृत करना ही जेण्डर का प्रमुख उद्देश्य, अभिप्राय एवं कार्य माना जाता है।

3. सांस्कृतिक समूह में जेण्डर (Gender in cultural group)—प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक सांस्कृतिक गतिविधियों में स्त्री एवं पुरुष की भूमिका को निश्चित किया गया है; जैसे —नृत्य पर एकाधिकार स्त्रियों का माना जाता है तथा नृत्य सम्बन्धी कार्यक्रमों में स्त्रियों को भाग लेने का अवसर दिया जाता है। वर्तमान में पुरुष वर्ग भी इसमें अपनी सहभागिता का प्रदर्शन करता है। भारतीय संस्कृति में स्त्री-पुरुष के लिये पृथक्-पृथक् गतिविधियों को निर्धारित किया गया है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में स्त्रियों की भूमिका को ही सर्वाधिक उपयोगी माना जाता है। **श्रीमती आर.के. शर्मा** के शब्दों में, "सांस्कृतिक समूह में जेण्डर का आशय सांस्कृतिक गतिविधियों में स्त्री-पुरुष की सर्वाधिक भूमिका के निर्णयन से है जिससे एक ओर सांस्कृतिक विकास होता है तो दूसरी ओर स्त्री-पुरुष दोनों को आत्म सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है।"

4. शिक्षित समाज में जेण्डर की परिभाषा (Definition of gender in educated society)—शिक्षित समाज में जेण्डर का अभिप्राय स्त्री-पुरुष की समानता के सन्दर्भ में होता है। इस प्रकार के समाज में सदैव स्त्री अपने वर्चस्व के प्रति सजग रहती है तथा अपने अधिकारों के लिये सदैव संघर्ष करती है। पुरुष वर्ग भी उसके आधिपत्य को स्वीकार करते हुए उसको अपने समकक्ष रखने का प्रयास करता है। यह व्याख्या स्त्री-पुरुष के मध्य असमानता की स्थिति के समापन के क्रम में चलती है; जैसे—शिक्षित समाज में पुरुष वर्ग भी रसोई में कार्य करता है तथा स्त्री वर्ग योग्यता के आधार पर नौकरी करता है। इस प्रकार शिक्षित समाज में जेण्डर का अर्थ किसी कार्य के विभाजन से न होकर सुविधाजनक एवं सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था से होता है। **प्रो. एस.के. दुबे** लिखते हैं कि, "शिक्षित समाज में जेण्डर से आशय समाज एवं परिवार की सन्तुलित एवं सुविधा जनक व्यवस्था से होता है जिसमें स्त्री-पुरुष अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुरूप कार्य करते हैं तथा आदर्श व्यवस्था को जन्म देते हैं।"

5. अशिक्षित समाज में जेण्डर की परिभाषा (Definition of gender in uneducated society)—अशिक्षित समाज में जेण्डर की परिभाषा स्त्री-पुरुष विभाजन से होती है जिसमें उनके परम्परागत कार्यों एवं रूढ़िवादी परम्पराओं को स्थान दिया जाता है; जैसे—स्त्री का पति मरने के बाद उसको दूसरा विवाह करने का अधिकार नहीं होता जबकि पुरुष को दूसरा विवाह करने का अधिकार होता है। इस प्रकार के दायित्वों एवं परम्पराओं का विभाजन स्त्री-पुरुष के मध्य परम्परागत रूढ़िवादी एवं असमानता के सन्दर्भ में होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अशिक्षित समाज में जेण्डर का आशय स्त्री-पुरुष के मध्य रूढ़िवादी दायित्व के विभाजन से होता है जिसमें पुरुष वर्ग का शक्तिकरण तथा नारी वर्ग का निर्बलीकरण प्रदर्शित होता है।

6. स्वयंसेवी सामाजिक समूह में जेण्डर की परिभाषा (Definition of gender in voluntary social group)—विभिन्न प्रकार की स्वयंसेवी संस्थाएँ स्त्री-पुरुष की समानता की बातें करती हैं। वहीं स्त्री के प्रति होने वाले सभी अपराधों को रोकने के लिये स्वयंसेवी संस्थाएँ विविध प्रकार के आन्दोलन चलाती हैं, समय-समय पर नारी सशक्तिकरण योजनाओं की समीक्षा करती हैं। इस प्रकार स्वयंसेवी सामाजिक समूह में जेण्डर का आशय उन सभी गतिविधियों, क्रियाओं, नीतियों एवं सिद्धान्तों से होता है जो नारी की स्थिति को सुधारते हैं तथा

Scanned with CamScanner

उसको पुरुष वर्ग के समकक्ष लाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार ये स्वयंसेवी संस्थाएँ लैंगिक विभेद को समाप्त कर आदर्श समाज की स्थापना करती हैं।

7. जातिगत समूह में जेण्डर की परिभाषा (Definition of gender in castism related group)—भारतीय समाज में विविध प्रकार की जातियाँ विविध कार्यों के लिये जानी जाती हैं। इन जातियों में जेण्डर का आशय स्त्री-पुरुष के विभेद पर आधारित होता है। इसमें भी स्त्री एवं पुरुषों के मध्य परम्पराओं एवं अधिकारों का वर्णन होता है; जैसे—राजपूतों की स्त्रियाँ जौहर करती थीं तथा अपने पति के शव के साथ सती होने वाली राजपूत स्त्री को समाज में प्रतिष्ठा प्रदान की जाती थी। इस प्रकार के अनेक जातिगत समूहों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का परम्परागत एवं आधुनिक रूप देखने को मिलता है। जहाँ स्त्रियाँ शिक्षित होती हैं वहाँ जेण्डर का अर्थ समानता के लिये कार्य करने से होता है। **प्रो. एस.के. दुबे** लिखते हैं कि, "जिस समाज में शिक्षित जातियों का समूह होता है वहाँ जेण्डर का अभिप्राय स्त्री-पुरुष के मध्य लैंगिक विभेद को समाप्त करने के प्रयासों से होता है जबकि अशिक्षित व्यक्तियों के समूह में दायित्वों के रूढ़िवादी विभाजन से होता है।"

8. धर्मगत समूह में जेण्डर की परिभाषा (Definition of gender in religious group)—धर्म सम्बन्धी समूहों में जेण्डर की परिभाषा में स्त्री-पुरुष के दायित्वों के विभाजन में असमानता की स्थिति देखी जाती है। अनेक स्थानों पर नारी को महान् स्थिति प्रदान की गयी है तो अनेक स्थानों पर पुरुष को महान स्थिति प्रदान की गयी है। परिणामस्वरूप धर्मगत समूहों में पुरुष वर्ग की स्थिति सशक्त होती है। धर्मगत समूह में स्त्री को दायित्वों का भार सर्वाधिक रूप में प्रदान किया जाता है। अतः धर्मगत समूह में जेण्डर का आशय स्त्री एवं पुरुष के मध्य आदर्शवादी एवं धार्मिक परम्पराओं के विभाजन से है जिनके परिणामस्वरूप स्त्री-पुरुष के मध्य व्यावहारिक एवं दायित्वों के रूप में विभेद दृष्टिगोचर होता है तथा पुरुष वर्ग की प्रधानता बनी रहती है।

Scanned with CamScanner